PROFORMA FOR SYNOPSIS

(Clause 5 of the ordinance - 45)

1.	Title of the thesis	: चन्द्रकॉता के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक समस्याएँ
2.	Introduction (in about 200 words)	: संलग्न
3.	A brief review of the work Already done in the field	: संलग्न
4.	Objectives	: संलग्न
5.	Noteworthy contribution in the Field of proposed work	: संलग्न
6.	Proposed methodology	: संलग्न
7.	Expected outcome of the Proposed work	: संलग्न
8.	Bibliography in standard format	: संलग्न
9.	List of published papers of the Candidate	:

Signature of the Supervisor	**Signature of the Co-supervisor**	**Signature of the Candidate**

1. *''चन्द्रकांता के उपन्यासो में चित्रित सामाजिक समस्याएँ''*

पं. रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

के कला संकायांतर्गत हिन्दी विषय में

पीएच.डी. उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध–प्रबंध की रूपरेखा

शोध निदेषक	सह–षोध निदेषक	शोध छात्रा
डॉ. उर्मिला शुक्ला	डॉ. राकेष कुमार तिवारी	श्रीमती डॉली पाण्डेय

शोध समिति

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

2. प्रस्तावना :–

महिला कथाकारों में चन्द्रकांता का एक विषेष स्थान है। उनकी रचनाओं का केन्द्र बिन्दु समाज रहा है। उन्होंने समाज की अनेक समस्याओं का चित्रण अपने उपन्यासों में किया है। चन्द्रकांता का संबंध कष्मीर से रहा है। कष्मीर में व्याप्त आतंकवाद की समस्या को भी अपने उपन्यास में उठाया है। कथा सतीसर में कष्मीर से विस्थापित कष्मीरी ब्राम्हणों की पीड़ा और त्रासदी को अभिव्यक्त करता उनका यह उपन्यास हिन्दी उपन्यासों में बहुत महत्वपूर्ण है। इसके साथ ही समाज में परिवार में उनके आपसी संबंध बदलती सामाजिक स्थितियां, बदलते परिवेष आदि का चित्रण इनका मूल उद्देष्य रहा है।

स्त्री समाज का मुख्य आधार है किन्तु समाज में हमेषा उसे दोयम दर्जा मिलता रहा है। चन्द्रकांता अपने उपन्यासों में इस स्थितियों का सिर्फ चित्रण ही नहीं करती बल्कि उसके खिलाफ आवाज भी उठाती है।

चन्द्रकांता बहुआयामी व्यक्तित्व की धनी है। इन्होंने कविताएं, कहानियां, उपन्यास एवम् सामाजिक समस्याओं पर स्वतंत्र किताबे भी लिखी है। इनकी प्रमुख रचनाओं में अर्थान्तर, बाकि सब खैरियत है, ऐलान गली जिन्दा है, यहां वितस्ता बहती है, अपने–अपने कोणार्क, कथा सतीसर अन्तिम साक्ष्य आदि इन सभी में सामाजिक समस्याओं के विविध रूप झलकते हैं। जिन पर इस शोध कार्य में विधिवत् प्रकाष डाला जाएगा एवम् अन्य महिला रचनाकारों से तुलनात्मक अध्ययन भी किया जाएगा।

3. प्रस्तावित क्षेत्र में पूर्व में सम्पन्न हुए शोध कार्यों का पूर्वानुसंधान :–

चन्द्रकांता के कथासाहित्य पर छत्तीगसढ़ में विषेष कार्य नहीं किए गए हैं। पं. रविषंकर शुक्ल विष्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) के अन्तर्गत चन्द्रकांता के साहित्य से संबंधित कोई भी शोध ग्रन्थ उपलब्ध नहीं है, उक्त विष्वविद्यालय में चन्द्रकांता की औपान्यासिक कृतियों में मेरा यह शोध कार्य मौलिक होगा। इस शोध कार्य से चन्द्रकांता के कथासाहित्य के विविध आयाम खुलेंगे।

4. उद्देष्य :–

1. चन्द्रकांता के प्रेरक व्यक्तित्व तथा विविधतापूर्ण रचना संसार का विष्लेषण करना।
2. चन्द्रकांता के उपन्यासों के षिल्पगत सौंदर्य पर प्रकाष डालना।
3. चन्द्रकांता के सामाजिक संदर्भों विषयक चिन्तन दृष्टि को स्पष्ट करना।
4. सामाजिक समस्या के संदर्भ में चन्द्रकांता के उपन्यासों का गहन विष्लेषण करना।
5. चन्द्रकांता व उनकी समकालीन महिला रचनाकारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
6. सामाजिक समस्याओं का वर्णन तथा उनका समाधान खोजना।

5. प्रस्तावित शोध कार्य का योगदान :–

हिन्दी साहित्य में सामाजिक समस्याएं एक आंदोलन के रूप में उभर कर आया। तत्कालीन महिला रचनाकारों में चन्द्रकांता का नाम अपनी विषिष्ट पहचान रखता है। चन्द्रकांता के साहित्य में अपेक्षित शोध कार्य नहीं किए गए हैं। अतः चन्द्रकांता का सामाजिक संदर्भ आधारित यह शोध कार्य निष्चित रूप से भावी शोधार्थियों व अध्येताओं को चन्द्रकांता के रचना संसार का परिचय देने के साथ–साथ उनके सामाजिक संदर्भ विषयक चिन्तन से अवगत कराने में सर्वथा उपयोगी सिद्ध होगा।

6. शोध प्रविधि :–

प्रस्तावित शोध कार्य वैज्ञानिक तरीके से सुनिष्चित क्रमानुसार सम्पन्न किया जाएगा। चन्द्रकांता के परिवेष, व्यक्तित्व तथा साहित्य का गहन अध्ययन किया जाएगा। विष्लेषण करने के बाद औपान्यासिक षिल्पगत सौंदर्य की विवेचना करते हुए लेखिका की वैचारिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट करते हुए उपन्यासों में व्यक्त उनकी गहन चिन्तन दृष्टि का अध्ययन किया जाएगा। तत्पष्चात् सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में चन्द्रकांता के उपन्यासों का विस्तृत विवेचन करते हुए उनके समकालीन महिला रचनाकारों का तुलनात्मक अध्ययन कर चन्द्रकांता के अविस्मरणीय साहित्यिक अवदान पर प्रकाष डाला जाएगा। इस प्रकार प्रस्तावित शोध कार्य वैज्ञानिक तरीके से विष्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग करते हुए क्रमबद्ध रूप में पूर्ण किया जाएगा।

7. प्रस्तावित शोध कार्य के अपेक्षित परिणाम :–

प्रस्तावित शोध कार्य में सषक्त लेखिका चन्द्रकांता के व्यक्तित्व तथा जीवनानुभवों से प्रभावित उनके उपन्यासों का सूक्ष्म विवेचन किया जाएगा। जिससे लेखिका के अंर्तमन पर सामाजिक राजनैतिक तथा आर्थिक परिवेष के गहन प्रभाव को समझने में सहायता मिलेगी। सामाजिक समस्याओं के संदर्भ में चन्द्रकांता के उपन्यासों में पारिवारिक, आर्थिक, राजनैतिक समस्याओं तथा अनेकानेक प्रष्नों पर प्रकाष डालकर लेखिका के सामाजिक जागरूकता के संदेष को व्यक्त करने का प्रयास किया जाएगा। चूंकि पं. रविशंकर शुक्ल विष्वविद्यालय रायपुर (छ.ग.) के अंतर्गत चन्द्रकांता के साहित्य से संबंधित शोध कार्य नहीं किया गया है। अतः प्रस्तावित शोध कार्य लेखिका के समाज विषयक चिन्तन को समझने में भावी शोधार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शोध–छात्रा

श्रीमती डॉली पाण्डेय

रूपरेखा

"चन्द्रकांता के उपन्यासो में चित्रित सामाजिक समस्याएं"

अध्याय प्रथम : चद्रकांता : परिवेष एवम् व्यक्तित्व विकास

1.1 समाजिक राजनैतिक , आर्थिक औपन्यासिक परिदृष्य

1.2 जन्म एवम् परिवारिक पृष्टभूमि

1.3 षिक्षा, साहित्य सृजन का प्रारम्भ ,व्यवसाय

1.4 व्यक्तित्व निरूपण

1.5 पुरस्कार एवम् सम्मान

अध्याय द्वितीय : चन्द्रकांता का रचना संसार : विवेचनात्मक अध्ययन

2.1 काव्य

2.2 उपन्यास

2.3 चिन्तन परक साहित्य

2.4 आत्मकथा

2.5 अनुवाद

2.6 संपादन

अध्याय तृतीय : चन्द्रकांता के कथा साहित्य वस्तु एवम् षिल्प

3.1 वस्तु विन्यास
3.2 चरित्र परिकल्पना
3.3 संवाद वैषिष्य
3.4 परिवेष
3.5 भाषा
3.6 षैली

अध्याय चतुर्थ : चन्द्रकांता के उपन्यासों मे समाजेत्तर समस्याऍ

4.1 सामाजिक स्थितियां
4.2 सामाज के अन्तर्गत विविध सामाजिक समस्याएं (विवाह, तलाक)
4.3 परिवारिक स्थितियां

4.4 आर्थिक स्थितियां
4.5 राजनैतिक स्थितियां
4.6 सांस्कृतिक स्थितियां
अध्याय पंचम : चन्द्रकांता के उपन्यासो में स्त्री की स्थिति
5.1 स्त्री की समस्या के विविध आयाम
5.2 स्त्री की आर्थिक स्थिति
5.3 स्त्री की सामाजिक स्थिति
5.4 नारी स्वातंत्रय एवम् नारी चेतना
अध्याय षष्ठ : समकालीन महिला कथाकार और चन्द्रकांता
6.1 मैत्रेयी पुष्पा
6.2 चित्रा मुदगल
6.3 ममता कालिया
6.4 अन्य
उपसंहार
परिषिष्ट

शोध निर्देषक	सहषोध निर्देषक	शोध छात्रा
डॉ. उर्मिला शुक्ला	डॉ. राकेष कुमार तिवारी	श्रीमती डॉली पाण्डेय

प्रचार्य

अध्यक्ष, विभागीय शोध समिति

दुर्गा महाविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)

ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ–सूची :–

1. चन्द्रकांता, अंतिम साक्ष्य और अर्थान्तर नई दिल्ली : समय प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2006.
2. चन्द्रकांता, बाकी सब खैरियत है, नई दिल्ली : नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, 1983.
3. चन्द्रकांता, ऐलान गली जिन्दा है, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 1994.
4. चन्द्रकांता, अपने–अपने कोणार्क, नई दिल्ली : राजकमल प्रकशन 1995.
5. चन्द्रकांता, यहां वितस्ता बहती है, नई दिल्ली–वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2010.
6. चन्द्रकांता, कथा सतीसर, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन, 2001.

सहायक ग्रंथ सूची :–

1. डॉ. रब्बानी शेख, हिन्दी उपन्यासों में सामाजिक परिवर्तन, कानपुर विधा विहार, प्रकाशन संस्करण 2007
2. पाण्डेय मैनेजर, आलोचना की सामाजिकता वाणी प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2005 ई.
3. शरण गिरधर, सामाजिक व्यवस्था पर व्यंग प्रभात प्रकाशन प्रथम संस्करण 1996.
4. राठी गिरधर, उहापोह, साहित्य संस्कृति आज, राधाकृष्ण प्रकाशन, प्रथम संस्करण 1998.
5. मुखर्जी रवीन्द्रनाथ, सामाजिक शोध के मूलतत्व, विवेक प्रकाशन : द्वितीय संस्करण 1990–91

6. शर्मा, क्षमा, स्त्रीत्ववादी विमर्श : समाज और साहित्य, नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण 2002.
7. जैन, मंजू, कार्यशील महिलाएं एवम् सामाजिक परिवर्तन, जयपुर : प्रिण्टवैल प्रकाशन
8. सिह, निशांत अपराध अस्मिता और औरत दिल्ली : सन्मांग प्रकाशन, प्रथम संसकरण 2002
9. कालिया, ममता, नरक दर नरक, नई दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 2008
10. हंस, सिंह सोहन, वारिस : वैभव प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2002
11. सक्सेना राजीव साहित्य और समाज–एक दृष्टिकोण सन्मार्ग प्रकाशन, संस्करण 2001
12. गुप्ता, रमणिका, दलित चेतना, साहित्यिक एवम् सामाजिक सरोकार, समीक्षा प्रकाशन संसकरण 2004
13. डॉ. नागेन्द्र साहित्य का समाजशास्त्र, प्रथम संस्करण 1982 ई.
14. कालिया, ममता, वेघर, साहद्रा दिल्ली : साक्ष्य प्रकाशन, 2002
15. पुष्पा, मैत्रेयी, खुली खिड़किया, नई दिल्ली : सामाजिक प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2003
16. राजकुमार (संपा) नारी शोषण : समस्याएं एवम् समाधान, नई दिल्ली : अर्जुन पब्लिशिंग हाऊस, प्रथम संस्करण.
17. जैन, अरविन्द, हिनमस्ता : परम्परा पूंजी और पहचान का आत्मसंघर्ष (संपा) राजेन्द्र यादव, हंस, जून 1996.
18. रोहिताश्व, आलोचना का परिप्रेक्ष्य विधा प्रकाशन, प्रथम संस्करण 2005 ई.

19. डॉ. श्रीवास्तव सिद्धार्थ, देह का समाजवाद, शिवम् प्रकाशन प्रथम संस्करण 2002

20. मिल, जॉन स्टुअर्ट, स्त्रियों की पराधीनता, राजकमल प्रकाशन प्रथम संस्करण 2002.

21. खेतान, प्रभा, बाजार के बीच : बाजार के खिलाफ भूमण्उलीकरण और स्त्री के प्रश्न, नई दिल्ली वाणी प्रकाशन, द्वितीय संस्करण 2007

22. डॉ. मूले रेखा, कथाकार चन्द्रकांता, विकास प्रकाशन प्रथम संस्करण 2005 ई.

23. मेघ कुंतल रमेश, विद्रोह और पिलानी साहित्य चिन्ता प्रकाशन

<u>पत्र पत्रिकाएं :–</u>

1. मधुरेश, महिला लेखन की सक्रियता, (संपा) गोपाल राय, समीक्षा, अप्रैल–जून 1994

2. जैन, अरविन्द छिन्नमस्ता परम्परा पूंजी और पहचान का आत्मसंघर्ष (संपा) राजेन्द्र यादव, हंस, जून 1996

3. मधुमती, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

4. बिष्ट, सिंह, जगत् महादेवी का नारी विषयक चिन्तन (संपा) प्रवीण उपाध्याय आजकल मार्च 2007

5. समकालीन साहित्य, संपा गिरधर राठी, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली

———X———